समाज में क्रांति ला सकता है एक शब्द

इतिहास यह प्रमाणित कर चुका है कि महाराज अग्रसेन भगवान राम के वंशज है, और क्षत्रिय कुल में उन्होंने जन्म लिया था। त्रेता युग में जन्में श्री अग्रसेन जी कोई साधारण मानव नहीं अपितु वह प्रभू श्री राम के वंशज होकर महान तपस्वी और यशस्वी राजा थे। जिन्होने देश और समाज को नया मार्गदर्शन दिया था। उन्होनें कठिन तपस्या से देवी महालक्ष्मी को प्रसन्न कर धर्म और वर्ण की रक्षा का वरदान प्राप्त किया तथा अपने समय में जीव हत्या को बंद कराया। वह महालक्ष्मी के परम उपासक और तपस्वी थे। जिन्होंने क्षत्रिय धर्म त्याग कर वैश्य वर्ण को अपना कर देश में एक नई क्रांति का सूत्रपात किया था। कलिकाल में तो उनकी प्रासंगिकता और भी बढ़ गई है। आज अनेक धर्म और जातियों हमारे यहां विद्यमान है और उनके अपने–अपने कुल पुरूष है। इतना ही नहीं कई जातियों और व्यक्तियों द्वारा पूजित गुरूओं और बड़ो को ही वह देवता के रूप में पूजने लगे है।

हमारे समाज में हमारे कुल पुरूष को हम महाराजा के रूप में पूजते है जबकि हमें उन्हें हमारे आराध्य के रूप में स्वीकार करना चाहिए था। हमारे वंश प्रवर्तक आज हमारे लिए केवल महाराजा रह गए है। जबकि अन्य धर्म के वंश प्रवर्तक राजा या राजकुमार होते हुए भी आज अवतारी पुरूष अर्थात भगवान के रूप में पूज्य है। हमारे देश के कई स्थानों पर अग्रसेन जी के मन्दिर है। विशेषकर अग्रोहा में जो अग्रसेन जी की कर्मस्थली माना जाता है। वहां पर उनका विशाल मंदिर है। रोज उनकी आरती होती है पूजा अर्चना होती है।

हम चाहते है कि अग्रसेन जी के नाम के आगे 'महाराजा' के बजाय 'भगवान' शब्द का उपयोग बोलने, सुनने, समझने एवं मनन करने के साथ ही आराधना में भी करें। क्योंकि 'महाराजा' शब्द से राजशाही, सामंतवादी एवं दरबार से सुसज्जित व्यक्ति का बोध होता है। इसकी जगह 'भगवान' शब्द के संबोधन में मन, कर्म एवं वचन में अपने आप श्रद्धा, भक्ति, लगाव एवं समर्पण की भावना निरन्तर विद्यमान रहती है।

प्रश्न यह उठता है कि जब हम उनकी पूजा अर्चना करते हैं उनकों अपना वंश, प्रवर्तक, महान तपस्वी, धर्मात्मा और कुलनायक मानते है। तो उनको महाराजा संबोधित कर उन्हें अन्य राजाओं की श्रेणी में क्यों रखतें हैं ? क्या हमारे कुल पुरूष भगवान के स्वरूप नहीं है। क्या हम उनकी पूजन अर्चना नहीं करते क्या हम लक्ष्मी पुत्र नहीं है तो फिर क्यों नही उनको भगवान के रूप में अपने हृदय पटल पर अंकित करते ? हम महाराजा–महाराजा कहकर ना केवल स्वयं को कलंकित कर रहे है वरन् हम अपनी भावी पीढ़ी को भी गुमराह करे रहे है। यही कारण है कि वर्षों से हम जिस सामाजिक संगठन को सशक्त बनाने के लिए कटिबद्ध हैं वह अभी तक अधूरा है। हमारे यहां नित्य नई कुरीतियां पैदा हो रही हैं और हम तिरस्कृत भी हो रहे हैं। हमें हिन्दू धर्म के अंर्तगत श्री अग्रसेन जी को अवतारी स्वरूप प्रदान कर उनके आदर्शों और सिंद्धातो को अपने परिवार समाज और देश को पहचान करानी होगी। तभी हम सिर उठाकर इस विशाल वटवृक्ष रूपी अग्रवंश को जीवंत स्वरूप प्रदान कर सकते है। इसलिए आज से ही यह प्रण करें कि हर घर में, हर मंगल कार्य में, व्यवसाय में यानी सभी कुछ में अब सर्व प्रथम हमारे आराध्य श्री अग्रसेन जी ही होगे और आज वह हमारे महाराजा न होकर कुल देवता हैं और हम उनकी कुलदेवता के रूप में नित्य पूजा अर्चना करे उनसे आशीर्वाद ग्रहण कर ही सभी कार्यों का श्रीगणेश करेंगे।

आज देश भर में अग्रवाल समाज द्वारा सैकड़ो की संख्या में धर्मशालाओं स्कूलो, औषधालयों आदि का निर्माण किया जा चुका है तथा कई जगह अभी भी निर्माण चल रहे हैं। इन सभी में भी भगवान श्री अग्रसेन जी की प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा आसानी से हो सकती है और यह हमारे शक्ति पुंज के रूप में विकसित हो सकते हैं। हमारे समाज में इस बात का प्रचार भी आवश्यक है कि अग्रसेन जी के दर्शन करने के पश्चात ही नित्य के कार्य प्रारंभ करें तथा महिलाओं, बच्चों और युवा पीढ़ी को उनकी ओर आसक्त करें। यह बड़े आश्चर्य और चिन्ता की बात है कि इतने बरसों के बाद भी हम हमारी पीढ़ी को श्री अग्रसेन जी के इतिहास

और उनके चिंतन का बोध नहीं करा पाये जिसकी वजह से वह पूरी तरह उनके प्रति उदासीन है। हम बीसवीं सदी की अन्तिम दहलीज लांघ चुके हैं और विश्व के सबसे बड़े प्रजातांत्रिक देश भारत की अर्थव्यवस्था में रीढ़ की हड्डी को सुदृढ़ बनाने में अपनी भूमिका निभा रहे है। बदलते सामाजिक परिवेश में जब धर्म और जाति का महत्व अत्याधिक हो चुका है। हमारे समाज का अपना कोई अस्तित्व उभरकर सामने नहीं आया है। इसका प्रमुख कारण हमारा समाज के प्रति लगाव नगण्य होना है। क्योंकि हम हमारे वंशजों को पूजते ही नहीं है उनके प्रति हमारे हृदय में कोई आत्मीयता अभी तक पैदा नहीं की गई है जिसकी वजह से हम सब कुछ होते हुए भी कुछ नहीं है। जिस जाति ने अपने कुल देवताओ को केवल महाराजा की संज्ञा देकर इतिश्री समझ ली हो वह जाति भला कैसे अपनी अलग से पहचान बना सकती है। इसलिए समय के साथ अपने में परिवर्तन लाते हुए यह आवश्यक हैं कि हम भी बदलें, हमारा सोच भी बदले, हमारे हृदय में हमारे कुल देवता के प्रति श्रद्धा और भक्ति का प्रार्दुभाव हो और यह डर रहे कि उनकी अवमानना से हमारा अहित हो सकता है। मेरा तो यहां तक कहना है कि यदि आप अपने कुलपुरूष श्री अग्रसेन जी की नित्य पूजा अर्चना हृदय से करें तो वह बड़ी से बड़ी विपत्ति से भी आपको मुक्ति दिलाने में सहायक हो सकते है।

हमारे देश में विभिन्न जातियों के महापुरूषों को भगवान का स्वरूप प्रदान कर उनकी पूजा की जाती हैं। देश भर में उनके मन्दिर है। यहां से उनको शक्ति और प्रेरणा मिलती है। देश भर में उनके मन्दिर है। यहां यदि स्थापित हो जाय तो हमारा समाज जागृत हो सकता है।

मेरा समाज के सभी वरिष्ठ समाज सेवियों से, कर्णधारों, समाज सुधारकों, राष्ट्रीय, प्रांतीय और स्थानीय संगठनों से आग्रह है कि वे अपने–अपने यहां यह संकल्प पारित करें और महाराजा शब्द को विलोपित कर भगवान श्री अग्रसेन जी की जय–जयकार कर भावी पीढ़ी के साथ ही समाज और देश को नई दिशा दें जिससे हम और हमारा संगठन एक शक्ति के रूप मे उभरकर सामने आये।

बोलो, भगवान श्री अग्रसेन जी महाराज की जय!!

डी.पी. गोयल, वरिष्ठ उपाध्यक्ष, म.प्र. अग्रवाल महासभा